पीएच.डी॰ शोध प्रस्ताव

खोरठा भाषा एवं साहित्य का जनमानस में प्रभावः एक अध्ययन

पीएच.डी॰ उपाधि हेतु शोध-प्रारूप

स्नातकोत्तर खोरठा विभाग

संकायः जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

राँची विश्वविद्यालय, राँची

वर्ष : 2025

शोध निर्देशक

डॉ0 कुमारी शशि
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची।
मो. नं.: 8789115824
E-Mail : kumarishashi1602@gmail.com

शोधार्थी

परशुराम मानकी
यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ.
स्नातकोत्तर खोरठा भाषा
राँची विश्वविद्यालय, राँची
मो. नं.: 8084384870
E-Mail : prashuram.manki2@gmail.com

खोरठा भाषा एवं साहित्य का जनमानस में प्रभावः एक अध्ययन

प्रस्तावना

अरस्तु ने कहा है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। किन्तु यह भी कहा जा सकता है कि मनुष्य एक भाषिक प्राणी भी है क्योंकि मनुष्य के पास एक अति विकसित भाषा है। यद्यपि सभी जीवों के पास अपनी-अपनी भाषाएँ हैं, पर उतनी उन्नत भाषा नहीं है जितनी की मनुष्य के पास है।

समाज के विकास के साथ-साथ भाषा का भी विकास होता रहता है। भाषा का संबंध साहित्य से है और साहित्य का संबंध समाज से। कहा भी गया है कि साहित्य समाज का दर्पण हुआ करता है। अर्थात् समाज में जो भी गतिविधियाँ होती है वे साहित्य में प्रतिबिंबित होती है। चूँकि भाषा साहित्य का उद्गम स्रोत समाज ही हैं तब यह स्वयं सिद्ध है कि भाषा एवं साहित्य का जनमानस में प्रभाव पड़ेगा ही। चूँकि यह भी उल्लेखनीय है कि भाषा का विकास एक निरंतर प्रक्रिया है। अतः भाषा में बदलाव भी होते रहते हैं। भाषा लोप एवं आगमन की प्रक्रिया निरंतर होती रहती है। जिसका प्रभाव समाज में पड़े बिना नहीं रह सकता। यह भी उल्लेखनीय है कि एक ही गाँव के विभिन्न जातियों की भाषा में किंचित अंतर पाया जाता है।

खोरठा चूँकि 31 हजार वर्गमील जैसे बडे क्षेत्र में लगभग दो करोड़ जैसी बड़ी जनसंख्या की भाषा है। फलतः इसके छः क्षेत्रीय भेद भी पाये जाते हैं।

फलतः इन सभी भेदों में किंचित अंतर भी देखा जाता है। किन्तु खोरठा भाषा के शिष्ट रूप में सभी क्षेत्रीय रूपों को प्रभावित कर एकरूपता की स्थापना की है। इसी को चिन्हित करना हमारा शोधकार्य का अभीष्ट है। चूँकि पूर्व में कहा गया है कि साहित्य समाज का दर्पण हुआ करता है। अतः समाज को उसकी असलियत भी दिखता है और समाज को उसके सही-गलत का बिंब चित्रित कर सही गलत का बोध कराता है और समाज को सही मार्ग अपनाने के लिए प्रेरित भी करता है तथा मार्गदर्शन का काम भी करता है।

भाषा एवं साहित्य जनमानस को पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राज्य, देश सभी स्तरों पर प्रभावित करता है। इस शोध कार्य का अभिप्रेत इसी प्रभाव को चिन्हित करना है।

चूँकि यह सर्वथा अछूता विषय है। इस विषय में अभी तक कोई काम नहीं हुआ है। अतः इस विषय में शोधकार्य करने की अनिवार्यता और प्रासंगिकता कई गुणी बढ़ जाती है। इसी से प्रेरित होकर मैंने इस विषय में शोध कार्य करने के लिए प्रेरित हुआ।

शोध की प्रेरणा -

मेरा जन्म झारखण्ड राज्य के उत्तरी छोटानागपुर प्रमण्डल के रामगढ़ जिला में हुआ है जो झारखण्ड राज्य के केन्द्र में स्थित है और यह 'खोरठा' भाषा-भाषी बहुल क्षेत्र है। यहाँ प्रसिद्ध माँ छिन्नमस्तिका मंदिर के साथ एक खनन, औद्योगिक और सांस्कृतिक केन्द्र है। मेरा बचपन जहाँ गुजरा और मेरा परवरिश जिस महौल में हुआ। वह खोरठा भाषा का मुख्य क्षेत्र है। इसलिए मुझे खोरठा भाषा से स्नातकोतर का पढ़ाई करने का अवसर प्राप्त हुआ, जिससे मेरी जिज्ञासा बढ़ती गई।

शोध का उद्देश्य -

1. खोरठा के शिष्ट रूप को जनमानस में पूरी तरह स्थापित कर दैनंदिन के जीवन में प्रयोग को बढ़ावा देना है।
2. खोरठा के विभिन्न क्षेत्रीय भेदों से उपर उठकर इसके शिष्ट रूपों की साहित्य लेखन को बढ़ावा देना।
3. सबसे उपर मायं माटी, मातृभाषा, मानुस, जल-जंगल, जमीन, अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए उपयुक्त साहित्य लेखन को बढ़ावा देना।
4. खोरठा भाषा की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, व्यापारिक आदि सभी क्षेत्रों में प्रयोग को बढ़ावा देना।
5. खोरठा साहित्य को सामाजिक कुरीतियों, भ्रष्टाचार से मुक्ति तथा नैतिकता युक्त समाज का स्थापना के लिए प्रेरित करना।
6. मानवीय मूल्यों, सामाजिक मूल्यों की स्थापना के लिए साहित्य का प्रचुर मात्रा में उपयोग करना।
7. शिष्ट साहित्य की सभी विधाओं में अन्याय एवं भ्रष्टाचार मुक्त समाज की स्थापना की दिशा में साहित्य लेखन को बढ़ावा देना।

शोध के महत्व -

1. **इस शोध कार्य के द्वारा खोरठा भाषा एवं साहित्य का समाज में प्रभाव पर एक समीक्षात्मक ग्रन्थ प्राप्त होगा जो पाठकों के लिए एक महत्वपूर्ण पाठ्य सामग्री के रूप में उपलब्ध होगा।**
2. **इस शोध ग्रंथ से खोरठा भाषा-भाषी एवं गैर खोरठा भाषी एवं साहित्य के समाजीकरण का ज्ञान प्राप्त होगा।**
3. **खोरठा भाषा एवं साहित्य में कालक्रम से बदलाव एवं समाज में उसके प्रभाव को भी परवर्ती पाठ्य जान पाएगें।**
4. **खोरठा साहित्य का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का प्रकाशन होगा।**
5. **शैक्षणिक एवं साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।**
6. **खोरठा साहित्य से सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण होगा।**
7. **खोरठा साहित्य से समझने, बोलने और चाहने वालों की संख्या में बढ़ोतरी होगा।**
8. **खोरठा साहित्यों के अध्ययन से भाषा, कला, सस्ंकृति, साहित्य एवं लेखन के क्षेत्र में सक्रीय शिक्षकों, छात्रों, शोधार्थियों के अनेक तथ्यों एवं विचारों की प्रस्तुति होगी।**

शोध की परिकल्पना:

किसी भी शोध कार्य में परिकल्पना का विशेष महत्व रहता है। परिकल्पना के आधार से ही किसी भी शोध कार्य को अंतिम स्वरूप प्रदान किया जाता है। परिकल्पना दो शब्दों के मेल से बना है- प्रथम शब्द 'परि' है जिसका शाब्दिक अर्थ 'पूर्व' अर्थात् पहले, द्वितीय शब्द 'कल्पना' है जिसका शाब्दिक अर्थ विचार, भावना, सोंच इत्यादि होता है। इस प्रकार पाते हैं कि जब एक शोधार्थी अपना शोधकार्य प्रारम्भ करने के पूर्व शोध विषय के संबंध परिकल्पित कार्य और परिणाम की ओर उसे करने की दिशा की धारणा रहती है। यह विचार को ही परिकल्पना कहा जाता है। परिकल्पना से उत्पन्न विचार शोध कार्य के पश्चात् सत्य अथवा असत्य भी होता है। मेरे शोध विषय से संबंधित निम्नलिखित परिकल्पनाएं है।

शोध विधि -

शोध की प्रक्रिया पूर्णतः वैज्ञानिक सर्वेक्षण के आधार पर होगी। यह प्रस्तावित तथ्यों पर आधारित होता है। इस प्रकार यह सुस्पष्ट हो जाता है, कि शोध कार्य बिल्कुल भी काल्पनिक तरीके से एकत्रित नहीं किया जा सकता है, इसके लिए विश्वसनीय तथ्यों, सूचनाओं, आँकड़ों आदि को संकलित करने की निम्नलिखित प्रविधियाँ हो सकती है-

1. **साक्षात्कार विधि**
2. **अवलोकन विधि**
3. **व्यक्तिक अध्ययन विधि**
4. **विश्लेषणात्मक विधि**

उपकरणः

शोध कार्य हेतु निम्नलिखित सामग्री का उपयोग किया जा सकता है-

1. **मोबाईल**
2. **कैमरा**
3. **कम्प्यूटर**
4. **इंटरनेट**
5. **पेपर इत्यादि।**

खोरठा भाषा एवं साहित्य का जनमानस में प्रभाव: एक अध्ययन

अध्यायीकरण

भूमिका

प्रथम अध्याय: खोरठा भाषा का सामान्य परिचय

(क) खोरठा भाषा का क्षेत्र एवं जनसंख्या

(ख) खोरठा भाषा का क्षेत्रीय भेद

(ग) खोरठा भाषा का जनसम्पर्क रूप में

द्वितीय अध्याय: खोरठा साहित्य का सामान्य परिचय

(क) लोक साहित्य

(ख) शिष्ट साहित्य

तृतीय अध्याय: खोरठा भाषा का जनमानस में प्रभाव

(क) परिवार

(ख) शिक्षा

(ग) गाँव

(घ) राज्य व राज्य के बाहर

(ङ) देश में

चतुर्थ अध्याय: खोरठा लोक साहित्य का जनमानस में प्रभाव

(क) लोककथा

(ख) लोकगीत

(ग) प्रकीर्ण साहित्य

पंचम् अध्याय: खोरठा शिष्ट गद्य साहित्य का जनमानस में प्रभाव

(क) कहानी

(ख) निबंध

(ग) नाटक

(घ) उपन्यास

(ङ) संस्मरण

(च) यात्रा-वृत्तांत

(छ) जीवनी

(ज) शब्द चित्र

षष्ठ अध्याय: खोरठा शिष्ट पद्य साहित्य का जनमानस में प्रभाव

(क) प्रबंध काव्य

- **महाकाव्य**
- **खण्ड काव्य**

(ख) स्फुट काव्य

- **कविता**
- **गीत**

उपसंहार

परिशिष्ट

- **संदर्भ ग्रंथ सूची**
- **आधार ग्रंथ सूची**
- **अनुसूची**
- **व्यक्तिक अध्ययन**
- **फोटोग्राफ**

नोट: शोध प्रबंध में यथा स्थिति समयानुसार आंशिक परिवर्तन हो सकता है।

शोध निर्देशक

डॉ0 कुमारी शशि
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची।
मो. नं.: 8789115824
E-Mail : kumarishashi1602@gmail.com

शोधार्थी

परशुराम मानकी
यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ.
स्नातकोत्तर खोरठा भाषा
राँची विश्वविद्यालय, राँची
मो. नं.: 8084384870
E-Mail : prashuram.manki2@gmail.com

आधार ग्रंथ सूची

1. **ओहदार डॉ**0 **बी॰एन॰ खोरठा भाषा एवं साहित्य उद्भव एवं विकास खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी**, **रामगढ़**, 2007
2. **कुमार डॉ॰ अरविंद खोरठा एवं नागपुरी का तुलनात्मक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन**, **झारखण्ड झरोखा राँची** 2014
3. **कुमारी**, **डॉ. शशि**, **जिनगीक डहर कविता संग्रह**, **ब्राइट एम.पी. पब्लिशर**, 2022
4. **कुमारी**, **डॉ. अर्चना**, **खोरठा शिष्ट साहित्य: एक अध्ययन**, **प्यारा**, **केरकेट्टा** ,**फाउण्डेशन**, 2015
5. **झा. डॉ॰ ए॰के॰ खोरठा भाषा का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन झारखण्ड झरोखा रातू रोड राँची** 2012
6. **तिवारी**, **रामकुमार**, **झारखंड़ की रुपरेखा**, **बिहार हिन्दी अकादमी**, 2019
7. **प्रभाकर**, **डॉ. गजाधर महतो**, **खोरठा भाषा और साहित्य**, **सफल प्रकाशन**, 2018
8. **प्रमाणिक**, **शिवनाथ**, **खोरठा लोक साहित्य**, **खोरठा साहित्य-संस्कृति परिषद्**, **बोकारो** 2004

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. **आला. कृष्ण चन्द्र दास, सईतल साड़ा आला प्रकाशन, पुष्पा प्रेस, चास, बोकारो** 1997
2. **ओहदार, बी.एन. खोरठा निबंध, जनजातीय भाषा अकादमी बिहार सरकार रांची** 1990
3. **कुमार, डॉ. विनोद सोंधमाटी, जनजातीय भाषा अकादमी, बिहार सरकार, राँची**, 1990
4. **गोस्वामी, मनपूरन, परासचित, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो**, 2006
5. **झा० डॉ**0 **ए० के० खोरठा गइद पइद संगरह बोकारो खोरठा कमिटी बोकारो इस्पात नगर**, 1989
6. **झा० डॉ**0 **ए०के० खोरठा साहित सदानिक व्याकरण, झारखण्ड झरोखा, रातु रोड. राँची**
7. **झा० डॉ**0 **ए०के० खोरठा कांठे पइदेक खंडी. खोरठा ढाकी छेतर कमिटि कोठार, रामगढ़**, 1983
8. **झा० डॉ**0 **ए०के० कविता पुरान, पुष्पा प्रेस, यदुवंश नगर, चास बोकारो**, 1994
9. **कुमार, डॉ**0 **दिनेश, खोरठा भाषा का तात्विक अध्ययन, शोध ग्रंथ**, 2024
10. **पानुरी, श्रीनिवास. चाभी काठी. बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह बोकारो, झारखण्ड**, 2006
11. **प्रबुद्ध, महेन्द्र तीन काठ धान उषा पब्लिशिंग हाउस, धनबाद**, 2007
12. **प्रबुद्ध महेन्द्र, चंदूलाल चौकीदार उषा पब्लिशिंग हाउस, धनबाद**. 2008
13. **भारत, शांति, बेलदरी, बोकारो खोरठा कमिटि, बोकारो**, 1990
14. **महतो, वासुदेव, खोरठा बेयाकरनेक दमराही, खोरठा भाषा साहित्य अकादमी, रामगढ़**, 2008

15. **महतो**, **वासुदेव**, **खोरठा व्याकरण कर एक खेमचा**, **रॉयल प्रकाशन**, **सेवासदन पथ राँची**

16. **महतो**. **श्याम सुंदर**, **मुक्तिक डहर**, **शक्तिग्राम विकास संघ**, **आजाद सिजुआ**, **भेलाटांड**, 1995

17. **राज**, **विश्वनाथ दसौंधी**, **माटीक पुथइल**, **बालीडीह खोरठा कमिटी**, **बालीडीह बोकारो**, 2008

खोरठा पत्र-पत्रिकाएँ

पत्रिकाएँ	संपादक	प्रकाश
इंजोर	धनंजय प्रसाद	मधुपुर, देवघर, 1997, देवघर, 1998-99
करील	बी.एन.ओहदार	ओरमांझी, राँची, 2009
खोरठा	श्रीनिवास पानुरी	बरवाअड्डा, धनबाद, 1970
तितकी	विश्वनाथ दसौंधी 'राज'	कतरासगढ़, धनबाद, 1977-78
तितकी	ए.के.झा	ढांकी क्षेत्र खोरठा कमिटी, रामगढ़
धरतीथान	शिवनंदन पांडेय	'गरीब', गिरीडीह
परास फूल	महेन्द्र प्रबुद्ध	धनबाद, 2009
मातृभाषा	श्रीनिवास पानुरी	बरवाअड्डा, धनबाद, 1957
लुआठी	गिरिधारी गोस्वामी 'आकाशखूँटी'	बालीडीह, बोकारो, 1999
सहिदान	फाल्गुनी मरीक कुशवाहा	गिरीडीह, 2002
सहिया	अनिल कुमार 'विस्थापित'	बोकारो, 2002